पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्लीः आषाढ़ 01, 1944

मंगलवारः 21 जून 2022

रक्षा मंत्री ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर लोगों को तन एवं मन को स्वस्थ रखने के लिए नियमित रूप से योग अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित किया

योग अपनी बढ़ती वैश्विक लोकप्रियता के कारण भारत की एक नई पहचान बन गया है: श्री राजनाथ सिंह

बेहतर भविष्य के लिए मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता: रक्षा मंत्री

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने लोगों से नियमित रूप से योग का अभ्यास करने का आह्वान करते हुए कहा कि योग तन और मन को स्वस्थ रखने में मदद करता है। रक्षा मंत्री 21 जून 2022 को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर श्री सद्गुरू के ईशा फाउंडेशन द्वारा आयोजित समारोह को आभासी रूप में संबोधित कर रहे थे। प्राचीन भारतीय प्रथा के फायदों पर प्रकाश डालते हुए, रक्षा मंत्री ने जोर देकर कहा कि योग न केवल शारीरिक फिटनेस का एक अच्छा साधन है, बल्कि सांसारिक अस्तित्व में निहित बेचैनी एवं भ्रम को दूर करके व्यक्ति को स्वस्थ रखने का एक तरीका भी है। उन्होंने कहा कि यह प्रथा विचारों और भावनाओं को नियंत्रित करने और उन्हें सकारात्मक दिशा में प्रशिक्षित करने में मदद करती है।

श्री राजनाथ सिंह ने जोर देकर कहा कि योग ने पिछले कुछ वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता की नई ऊंचाइयों को छुआ है और आज यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन में और लोगों के सक्रिय सहयोग के माध्यम से भारत की एक नई पहचान बन गया है। उन्होंने कहा, "हमारे प्रधानमंत्री ने संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से योग दिवस मनाने का आह्वान किया था। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस प्रस्ताव को अपनाना निश्चित रूप से मानवता के कल्याण की दिशा में एक बड़ा कदम था। यूनेस्को द्वारा 01 दिसंबर 2016 को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में शामिल किए जाने से योग ने दुनिया भर में और अधिक मान्यता प्राप्त की।

रक्षा मंत्री ने श्री सद्गुरु और ईशा फाउंडेशन द्वारा लोगों को पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने के लिए प्रेरित करने के अलावा, योग के माध्यम से अधिक खुशहाल और अधिक सार्थक जीवन जीने के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना की। उन्होंने कहा, "भारत सदियों से विश्व शांति और इसी तरह के मानवतावादी विचारों का प्रसार कर रहा है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का संदेश देकर भारत ने अपनी सीमा के भीतर रहने वाले लोगों को ही अपना परिवार नहीं माना है, बल्कि पूरी दुनिया के लोगों को एक माना है। सद्गुरु ने निश्चित रूप से एक नए पर्यावरण आंदोलन की रचना के लिए दुनिया भर के लोगों को एक सूत्र में बांधकर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को जीवंत किया है। वह 'मिट्टी बचाओ' जैसे अभियानों के माध्यम से भौतिक दुनिया को समृद्ध कर रहा है और साथ ही आध्यात्मिकता के माध्यम से पारलौकिक संदेश दे रहा है"।

श्री राजनाथ सिंह ने पर्यावरण की दुर्दशा पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि पृथ्वी का पारिस्थितिकी तंत्र इस तरह से बना है कि किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में प्रभाव केवल उस क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहता है, बल्कि यह पूरी दुनिया को समाहित करता है। उन्होंने कहा, "कार्बन उत्सर्जन इसका एक उदाहरण है। यहां तक कि अगर यह एक देश में हो रहा है, तो यह निश्चित रूप से अन्य सभी देशों को प्रभावित करता है। यही कारण है कि वैश्विक पर्यावरण संरक्षण के संबंध में सभी शिखर सम्मेलनों, विशेष सभाओं, सम्मेलनों और समझौतों, चाहे वह रियो शिखर सम्मेलन हो, मरुस्थलीकरण से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन, जलवायु परिवर्तन सम्मेलन, क्योटो प्रोटोकॉल या पेरिस सम्मेलन हो, वे इसी तरह से एकजुट होकर कार्य करने के लिए दुनिया के सभी देशों का मार्गदर्शन करते हैं। एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में भारत अपनी परंपरा और संस्कृति द्वारा निर्देशित, मिट्टी संरक्षण के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। केवल मिट्टी पर ध्यान केंद्रित करके मृदा संरक्षण नहीं किया जा सकता है। हमने इससे संबंधित अन्य सभी घटकों जैसे पौधारोपण, वन्यजीव, जलमयभूमि आदि को संरक्षित करने और बढ़ाने का प्रयास किया है। सामूहिक प्रयासों से ही सामूहिक समस्याओं का समाधान संभव होगा। इसलिए, यह आवश्यक है कि हम सभी मिट्टी और पर्यावरण की रक्षा करने का प्रयास करें और एक बेहतर दुनिया की ओर एक साथ आगे बढ़ें।

रक्षा मंत्री ने विज्ञान के क्षेत्र में नई प्रौद्योगिकियों को खोजने और नवाचार करने का आह्वान किया जो पर्यावरण के अनुकूल मूल्यों को बरकरार रखेंगे। उन्होंने कहा, “हमें प्रकृति का साथी बनना चाहिए और सजीव प्राणियों के साथ-साथ प्रकृति के निर्जीव तत्वों के प्रति श्रद्धा और सम्मान की भावना होनी चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि धीरे-धीरे मानव सभ्यता हमारे समय की पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करेगी और हम सभी के लिए एक खुशहाल, समृद्ध, उचित और दीर्घकालिक भविष्य का निर्माण करेगी।”

श्री राजनाथ सिंह ने 'मिट्टी बचाओ' अभियान को आशा की किरण करार दिया क्योंकि यह विश्वास पैदा करता है कि इस अभियान के माध्यम से दुनिया भर के लोग आने वाले समय में मिट्टी के संरक्षण में योगदान देंगे। उन्होंने कहा कि यह अभियान न केवल मिट्टी की रक्षा करने का प्रयास है, बल्कि मानव सभ्यता एवं संस्कृति को संरक्षित करने का प्रयास है।

एबीबी/डीएस/आरपी